श्री कृष्ण आरती
आरती युगल कशिोर की कीजै।
राधे तन मन धन न्यौछावर कीजै॥
रवि शशि कोटि बिदन की शोभा।
ताहि निरिख मेरो मन लोभा॥
गौर श्याम मुख नरिखत रीझै।
प्रभु को रुप नयन भर पीजै॥
कंचन थार कपूर की बाती।
हरि आए नरि्मल भई छाती॥
फूलन की सेज फूलन की माला।
रत्न सहिासन बैठे नन्दलाला॥
मोर मुकुट कर मुरली सोहे।
नटवर वेष देख मन मोहे॥
ओढ़े पीत नील पट सारी।
कुंज बहिारी गरिविर धारी॥
श्री पुरुषोत्तम गरिविर धारी।
आरति करत सकल ब्रज नारी॥
नंदनंदन वृषभानु कशिोरी।
परमानन्द स्वामि अवचिल जोरी॥